VOL- VIII ISSUE- X OCTOBER 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

सुकरात : एक महान शिक्षाशास्त्री

डॉ. प्रकाश कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक,
श्रीमती सुशिलादेवी साळुंखे कॉलेज ऑफ एज्युकेशन,
उस्मानाबाद.

परिचय :

जीवन का रहस्य और बाहरी जगत की संगती, विसंगति और आश्चर्यजनक घटनाओं के द्वारा इन्सान विचारशील बनता है । इन्हीं वैचारिक प्रकियाओं द्वारा उसके विचारों में सुसूत्रता आयी और आगे जाकर तात्त्विक एवं शास्त्रशुध्द विचार बढते चले गए । ग्रीक दर्शन की शुरूआत ऐसे ही बाहरी जगत की जानकारी लेने के संबंध में हुई थी । विश्व का निर्माण कैसे हुआ होगा, इस विशाल विश्व का सार और सत्त्व किस में है इस तरह के सवालों की चर्चा हुई । उसके बाद नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, राज्यशास्त्र, मनोविज्ञान, काव्यशास्त्र आदि विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया । इन्सान के मन का अंतिम लक्ष्य क्या है, सबसे अच्छी बात कौनसी है इन सवालों के जवाब ढूँढते समय ज्ञानशास्त्र और दर्शन का अभ्यास आवश्यक बन गया । अंत में इन्सान और ईश्वर का संबंध किस प्रकार से हैं इस बात का भी विचार हो गया । ग्रीक दर्शन के मुख्यत: चार भाग हैं ।

पहला भाग :

पहले भाग के दर्शन ने प्रकृति के रहस्य का खुलासा करने की कोशिश की । ये जडजीववादी थे । प्रकृति सचेतन सजीव है ऐसा विचार उसवक्त प्रस्तुत किया गया । यह दर्शन सैध्दांतिक था । पदार्थ वस्तु का सार किसमें होता है इसका विचार उन्होंने किया । उस काल में थेलिस, ॲनॅक्सिमेनिझ, ॲनॅक्सिमॅडर इन्होंने मूलभूत पदार्थ कौनसा है इस सवाल का जवाब ढूँढने की भरसक कोशिश की। एक वस्तु का दूसरे वस्तु में परिवर्तन होते समय क्या होता है, उसमें किस तरह का बदलाव होता है आदि प्रश्नों का विचार किया गया ।

दूसरा भाग :

दूसरे भाग में सॉफिस्टस और सुकरात इनका अंतर्भाव होता है । बाहय जगत की निर्मिती कैसे हुई, इस विश्व का निर्माण और उसकी रचना कैसे हुई इससे ज्यादा इन्सान संबंधी प्रश्न उन्हें ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगे । ज्ञान क्या है, सत्य किसे कहते हैं, सही या गलत का मतलब क्या है, अच्छाई या बुराई का मतलब क्या है, संस्था या सरकार के हेतु कौनसे हैं इन मूलभूत सवालों का उन्होंने विचार किया । सॉफिस्टस वैचारिक दृष्टि से क्रांतिकारी और बागी थे । इन्सानी बुध्दि को सभी सवालों के जवाब मिल सकेंगे ऐसा सॉफिस्टस को लगता नहीं था। तत्त्वमीमांसात्मक चिंतन के बारे में वे उदासीन थे। उन्होंने इन्सान को अपने दर्शन के बीच में रखा और सुकरात के दर्शन को रास्ता खुला किया। सुकरात का समय तात्त्विक और वैचारिक पुनर्रचना का काल था । इसी समय संदेहवादी लोगों ने जो ज्ञानपर हमले किए उसी को उन्होंने रोका। सुकरात ने तार्किक पध्दति से सत्य ढूँढने का रास्ता दिखाया। शुभ का मतलब क्या है यह दिखाते समय नीतिशास्त्र की नींव उन्होंने डाली । उन दौरान ॲथिन्स यह ज्ञान का केंद्र बन गया था ।

तिसरा भाग :

इस तिसरे भाग में प्लेटो और ॲरिस्टॉटल का कार्य है । उन्होंने मीमांसात्मक और मानवतावादी प्रश्नों को महत्त्व दिया है । सुकरात उन्हीं के दर्शन को आधारभूत थे । सुकरात का आधार लेकर उन्होंने वर्तन, ज्ञान और सरकार के बारे में सिध्दांत रखे हैं जो कि बुध्दिवादी थे । उनका दर्शन बुध्दिवादी, समीक्षात्मक, द्वैतवादी और मानवतावादी था।

चौथा भाग :

ग्रीक दर्शन का यह चौथा भाग ॲरिस्टॉटल के बाद का समय था । जस्टिनियन इस बादशाह ने इ.स. ५२९ में तत्त्वज्ञान के सभी अभ्यासकेंद्र बंद किए । उस

समय ॲथिन्स, अलेक्झांड्रिया और रोम यह तत्त्वज्ञान के केंद्र थे । झिनो यह आत्मसंयमवादी तो इपिक्युरस यह सुखवादी था । झिनो की नजर से सद्‌गुणी जीवन, और सुखवादी लोगों की दृष्टि से सुख और आनंदभरा जीवन यही सर्वोत्तम जीवन था । ग्रीक दर्शन और पौर्वात्य धर्म के संबंध में से धर्मशास्त्रविषयक दर्शन इस काल में सामने आया । सुकरात पूर्व और सुकरात के बाद ग्रीक दर्शन के पृष्ठभूमिपर सुकरात का जीवन और दर्शन समझ लेना उचित होगा।

सुकरात का बचपन :

सुकरात का जन्म ॲथिन्स में इ.स.पू. ४६९ में हुआ । उनके पिता जी मूर्तियॉ बनाते थे । ॲथिन्स का वातावरण उनके लिए बहुत ही अनुकूल था और उसी के कारण उनका बौध्दिक विकास बहुत ही अच्छी तरह से हुआ । कुछ समय तक अपने पिता जी का व्यवसाय उन्होंने सम्भाला लेकिन उस काम में उनकी रूचि नहीं थी । दूसरों को प्रश्न पूछकर आत्मपरीक्षण करने की जिम्मेदारी खुद पर आ पडी है ऐसा उनका मानना था । सुकरात हर तरह के इन्सान से रास्ते में, बाजार में बातें करते थे । राजनीति, युध्द, दोस्ती, प्यार, शादी, कला, घर का कामकाज, व्यापार, काव्य, शास्त्र, धर्म और नैतिकता पर वे चर्चा करते रहते थे । बाहय जगत के पत्थर, पेड, चॉदनियॉ इनके बजाय दार्शनिक इन्सान के मन का अभ्यास करना चाहिए ऐसा उनका विचार था । वे सदाचार भरे वर्तन की एक अच्छी खासी मिसाल थे । वे उदार, उदात्त और मितव्ययी थे । आत्मनियंत्रण और सहनशक्ति के सहारे वे किसी के वश में नहीं गए, बुरी परिस्थितियों का भी उन्होंने सामना किया । जो सही है वह करने के लिए वे ना कभी चुॅके और ना ही कभी डरें । शारीरिक दृष्टि से वे आकर्षक नहीं थे, उन्हें कम दिखाई देता था लेकिन उनके पास बहुतही ज्यादा ज्ञान था ।

वे छोटे थे लेकिन नैतिकता उनके पास बहुत थी । उनका मुॅह बडा था लेकिन वे थोडा लेकिन परिणामकारक ही बोलते थे । दिखने में कम लेकिन मौजुदगी में वे ज्यादा रूचि लेते थे । दार्शनिक आदमी ज्ञानी कितना है यही बात महत्त्वपूर्ण होती है । उनके भाषण सभी लोग सुनते थे । उनके विचार प्रगतिशील थे उसी के कारण जवान अभिभूत होते थे । उनके शिष्य कम थे लेकिन वे उन्हें मानते बहुत थे और उनके साथ इमानदार थे । उसी में से एक था ॲल्सिबायडिझ जो बहुत ही अमीर था । क्रिटो एक ऐसा था जो कि अपने दोस्तों के उपर अपनी जान लुटाता था । ॲरिस्पिटस यह बहुत ही आराम करनेवाला और स्वतंत्र दुनिया के सपने देखनेवाला था । सुकरात की गरिबी पर प्यार करनेवाला उनका एक शिष्य था ॲटिस्थेनिझ । अपने गुरू के विचारों को शब्दों में पिरोनेवाला प्लेटो था । सुकरात का कहना था कि खुद को कुछ न समझकर बहुत कुछ समझा है ऐसा दिखानेवाला आदमी मूर्ख और पाखंडी होता है । खुद को बहुत कुछ समझा है लेकिन बहुत कम समझा है ऐसा दिखानेवाला आदमी व्यावहारिक होता है । सबकुछ समझा है लेकिन कुछ भी समझा नहीं है ऐसा दिखानेवाला आदमी विनम्र और ज्ञानी होता है । I am wise because I know that I am not wise यह सुकरात का विचार उनकी विनम्रता दर्शाता है ।

इ.स.पूर्व पॉचवे शतक के बाद ग्रीस का सामाजिक और राजकीय जीवन भ्रष्ट बना हुआ था। बौध्दिक और सामाजिक जीवन में बहुत ही तहलका मचा हुआ था । इसी समय लोकतंत्र का विचार गति के साथ सामने आया और उन विचारों के आधार पर कुछ सामाजिक संस्थाओं की निर्मिती हुई । स्वतंत्रता यह शब्द सामान्य हो गया था । व्यक्तिस्वतंत्रता के विचारों में से जिद बढ गई थी । हर कोई अपना विचार और अपना ही मत प्रमाण मानने लगा था । सत्ता और सत्ता हासिल करने के लिए जो भी कुछ लगता था उसे बहुत ही महत्त्व आ चुका था । समाजिक सरोकार की बली चढाकर स्वार्थी वृत्ति बढ गई थी । जो अमीर थे वे आराम की और आलस्य भरी जिंदगी जी रहे थे । गरिब लोग आपस में झगडते थे । परंपरागत विचार पूरी तरह से नष्ट नहीं हुए थे और नए विचार पूरी तरह से जडे नहीं थे । ऐसी स्थिति में ग्रीस में बौध्दिक और नैतिक जीवन को अनुशासन की और दार्शनिक की जरूरत थी जो सुकरात ने पूरी की ।

समाज के शिक्षक सुकरात :

सुकरात सच्चे अर्थो में समाज के शिक्षक ही थे । दार्शनिक विषयों पर लिखने की अपेक्षा उन पर बोलना उन्हें पसंद था। सुकरात पश्चिमी दर्शन के प्रणेता बने । प्लेटो ने लिखे संवाद से सुकरात का जो चित्र उभरकर सामने आता है वही उनके अभ्यास का

मुख्य आधार है। उन्हें जानकर लेते समय कुछ हिस्सों में ॲरिस्टॉटल का भी उपयोग होता है। प्लेटो के संवाद में सुकरात के विचार कितने हैं, उन विचारों में प्लेटो के विचारों का कितना होना है, उन दोनों के विचारों में कितना मिश्रण है यह ढूँढना बहुत ही मुश्किल है। बर्ट्रांड रसेल कहते हैं कि, ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके बारे में एक निश्चित है कि उनके बारे में हमें थोडी सी जानकारी होती है। और आदि लोगों के बारे में एक बात तय है कि उनके बारे में बहुत सी जानकारी होती है। लेकिन सुकरात के बारे में यह अनिश्चितता है कि हमें उनके बारे में ज्यादा जानकारी है या कम, यह मालुम ही नहीं होता है। कोई भी विचार व्यक्तिपरक नहीं बल्कि तर्कसंगत होना चाहिए ऐसा सॉफेस्टिस का कहना था।

कई बार अपने पूर्वग्रह, बिना ज्यादा सोचे समझे दिए गए बयान होते हैं। हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसके बारे में हमें स्पष्ट होना चाहिए तभी दूसरों पर उसका असर अच्छा हो सकता है। हमें वैचारिक घटनाओं और उनके संदर्भ की सहायता से अपने सोच की जॉच करनी चाहिए। ऐसे विचारों से सुकरात उनके समय के अन्य दर्शनों से अलग लगते हैं। सुकरात का मत ऐसा था कि, परमसत्य जैसी कोई चीज नहीं होती और शुध्द ज्ञान अप्राप्य होता है। वे कहते थे कि, लोग अलग पध्दति से सोचते हैं, उनके विचारों में फर्क होता है, एक राय दूसरे विचार को चुभती है, एक राय उतनी ही अच्छी या उतनी ही बुरी होती है जितनी की दूसरी। ऐसी परिस्थिति में सत्य कहॉ से मिलेगा? जबकि यह बात कुछ हद तक सही है ऐसे विविध विचारों में एकता खोजना एक सच्चे विचारक का काम है। सुकरात ने राय और सिध्दांत के बीच अंतर किया है। राय सही या गलत हो सकती है, लेकिन सिध्दांत ज्यादा तर व्यापक और स्वीकार्य होता है। सिध्दांत बताते हुए या चर्चा के दौरान निष्कर्ष निकालते हुए सामने वाले व्यक्ति की परीक्षा लेते थे। मुझे कोई जानकारी नहीं है ऐसा कहते कहते वे सबसे ज्यादा जानकारी देते थे। इसी प्रकार उनकी विनम्रता स्पष्ट हो जाती थी और सामने वाला आदमी चर्चा में ज्यादा हिस्सा लेता था। चर्चा के विषय में मैं अज्ञानी हूँ ऐसा पहले वे कहते थे लेकिन बाद में उन्हीं के पास ही ज्यादा ज्ञान है ऐसा मालुम हो जाता था।

निष्कर्ष : संभाषण में खुद से ज्यादा दूसरे को, परिवार से ज्यादा समाज, सरकार और इससे ज्यादा कानून को ज्यादा महत्त्व देनेवाले सत्यप्रेमी, ज्ञान से भरे इस सागर को और नीतियुक्त सुकरात को ग्रीक समाज अच्छी तरह से पहचान नहीं सका, यह बहुत ही दुखभरी दास्तान है । सुकरात ने यौवन को बिगाड दिया है, स्थानिय देवताओं को वे मानते नहीं थे, बुरी चीजें अच्छी होती हैं ऐसा वे दिखाते हैं, वे लोकतंत्र के विरूध्द हैं, वे खुद को ज्ञानी समझते हैं, ऐसे इल्जाम उनपर थे। उनके मुख्य वादी में से एक राजनीतिज्ञ थे, दूसरे कवि मेटेलस और तिसरे लायकॉन वक्ता थे। सुकरात ने अदालत में आरोपों से इन्कार किया। फिर भी उन्हें मौत या निर्वासन की सजा सुनाई गई। उस समय वे सत्तर साल के थे। वे निर्वासन स्वीकार करके मृत्युदंड से बच सकते थे लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। जो गुनाह किया ही नहीं उसके लिए माफी मॉगने से परहेज किया। उन्होंने अपने उपर आरोप लगानेवालों के दुर्व्यवहार की जिम्मेदारी लेने के बजाय मौत को प्राथमिकता दी। जेल में उन्हें जहर दिया गया। इ.स.पूर्व ३९९ में ॲथिन्स की भीड ने एक महान विचारक को मार डाला। सजा के डर से सुकरात शांत रहेंगे ऐसा उनके विरोधी और न्यायाधीश का अंदाजा था जो कि सरासर गलत था। प्लेटो के ॲपॉलॉजी इस ग्रंथ के सुकरात लोगों को अपील करते हैं कि अपना और अपनी संपत्ति का विचार करने के बजाय अपनी आत्मा की उन्नति और विकास का पहले विचार करना चाहिए । पैसा सद्‌गुण नहीं दे सकता लेकिन सद्‌गुण हो तो पैसा आ सकता है ।

संदर्भ :

1. डॉ.हिरा अहेर, उदयोन्मुख समाजातील शिक्षण व शिक्षक, नागपूर, सुविचार प्रकाशन.
2. डॉ.शशी वंजारी, डॉ.वसुधा देव, उदयोन्मुख समाजातील शिक्षण, नागपूर, रेणुका प्रिंटर्स.
3. डॉ.के.यु.घोरमोडे, डॉ.कला घोरमोडे, शैक्षणिक विचारवंत भारतीय व पाश्चात्य (२००६), नागपूर, विदया प्रकाशन.
4. डॉ.सहदेव चौगुले, पाथेय भाग – १ ; २०१२, कोल्हापूर, रिया पब्लिकेशन्स.
5. साने गुरूजी, पाश्चिमात्य तत्त्वज्ञानाची कहाणी, कोल्हापूर, रिया पब्लिकेशन्स